



# मज़ायात पर औरतों की हाजिरी

इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी



[www.jannatikaun.com](http://www.jannatikaun.com)



# मज़ारात पर औरतों की हाज़िरी

JANNATI KAUN?

मुसन्निफ़

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादिरि मुहद्दिस बरेलवी

मुतर्जिम

डा० मौलाना सिराज अहमद कादिरि बस्तवी

(एम ए पी एच डी)

## फैसला मजलीस

नं.	क्या ?	कहाँ ?
1	हराम आगाज	4
2	मुताजिब की बात	6
3	औरतों के लिये जियारत कुबूर की मुमानअत	7
4	कलीम उल्मा की तरफ से औरतों के लिये जियारत कुबूर की मुमानअत	14
5	हुजूर अकरम की तरफ से औरतों को मनाजे ईद पढ़ने का हुक्म	15
6	हुजूर का हुक्म कि औरतों को मस्जिद से न रोको	16
7	महफिले बज्ज और जमाअत में औरतों की शिरकत नाजाइज है	17
8	हजरत आइशा और आइशिन की तरफ से औरतों के लिए मुमानअत	18
9	हजरत उमर फारुक की तरफ से मुमानअत	19
10	जवान व बूढ़ी औरतों के लिये जमाअत में शिरकत की मुमानअत	20
11	अब्दुल्नाह उन्ने उमर का कवरियाँ भाकर औरतों को मस्जिद से निकालना	20
12	रातबी के प्रस्ताव का दूर करना अहम है।	21
13	अपने नास पर एतेनाद करने वाला अहमक है।	23
14	नक व बाद में फर्क भुरिकल है।	25
15	औरतों के लिये जियारत कुबूर की मुमानअत	26
16	मनाज के लिये औरतों का निकलना मना है क्या?	26
17	फर्कत का हुक्म गालिब के एतेबार पर होता है।	29
18	हन्ती उतारना में हुक्म मुताजिब रखा है।	31
19	औरतों के लिये जमाअत में हामीलियात मकूल है।	31
20	औरतों के लिये जियारत कुबूर की मुमानअत अहम है।	33
21	जियारत कुबूर की औरतों को उस वक्त इजाजत थी जब मस्जिद में जाना मुबाह था	34
22	कबो घर जाने वाली औरतें मुस्ताहिबो लानत हैं	36
23	हजरत जुबैर ने अपनी जीजा को मस्जिद नबवी में जाने से रोक दिया	37
24	यह मुमानअत रफअए शर के लिये है।	38
25	गल्बए फसाद के पेशे नज़र जमाअत में औरत की शिरकत मना है।	39
26	जियारत कुबूर औरतों के लिये हराम है।	40
27	शीहर सिर्फ चन्द मकाम पर जाने के लिये इजाजत दे।	41
28	महज जियारत कब और जियारत कुबूर के लिये औरतों के निकलने में फर्क।	43
29	औरतों का जियारत कुबूर के लिये जाना मकूल है सहरीमी है।	45
30	जनाजे में शिरकत की मुमानअत।	45
31	जियारत कब से मना करने में और न मना करने में ततबीक।	46
32	अल्नाह की तरफ बुलाने वाला सिर्फ नद ही हो सकता है।	47



## हरफे आयाज

### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमत का हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि आलम में इस्लाम की उन अजीम हस्तियों में शुमार होता है जिनका वरुदे मसऊद तारीख के उस हिस्से में होता है जबकि तमाम अतराफ व जयानिव से शजरे इस्लाम को बातिल कुव्वतें नेस्तो नाबूद करने की नाकाम कोशिशें करती हैं और अहले इस्लाम को किस्म-किस्म के सब्ज बाग दिखाकर बातिल के दाम में फंसा कर इत्तेबाअ शर्यातीन पर ला खड़ा करने के लिए हमारा रोज गामज़न रहती है। ऐसे वक़्त में हजारहा गर्दिशे लैलो नहार लोगों की उन दुआओं और आरजूओं में कट जाती है कि परवरदिगारे आलम एक अजीम इंसान पैदा फ़रमा जो जाअल हक व जहकल बातिल का मजहर हो—तब कहीं जाकर ऐसी शख़सीयत लोगों के सामने नुमाया होली है जो दीन व दुनिया के वह काम जो आम लोग सदियों में नहीं कर पाते थोड़ी मुदत में कर जाती है और दुनिया उसके कारन, देखकर अंगुशत बदन्दों और मुतहय्यर रह जाती है और यह कहने पर मजबूर हो जाती है कि उसके पीछे कोई खुदाई ताक़त जरूर कार-फ़रमा है जो उससे इतने अजीम काम अंजाम दिलाती है फिर ऐसी शख़सीयत को आखिर-कार दुनिया 'मुजिददे दीन व मिल्लत' कहने पर मजबूर हो जाती है।

मेरी गुफ्तगू मौजूदा सदी के 'मुजिददे आजम इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा वरिज़वान के बारे में है जिनके बेशुमार कारनामे और तसानीफ़े कसीरा से अवराफ़ भरे पड़े हैं। वक़्त का बहुत बड़ा सानिहा है कि आज मुसलमान उस मुजिद की पचास उलूम व फ़ुनून पर लिखी हुई किताबों कि इशाअत तो दर किनार कितनी कुतुबे नादिरा महफूज़ भी न रख सके अगरचे इशाअती काम मामूली नहीं इसमें हजारहा दिक्कतें सामने आती हैं। सैकड़ों वसाइल तलाश करने पड़ते हैं। साथ ही माल व दौलत की फरावानी भी चाहिए इस लिहाज़ से यह काम अहले दुवल का था। मगर इस्लाम की तरफ़ से उनकी तवज्जोह ज्यादातर हट जाने की वजह से गरीब मुसलमानों ही ने यह बेड़ा उठाया। हाँ इस मौजू पर अल-मजमउल



इस्लामी का जिक्र बेजा न होगा जिसने अपनी दाद आफरी काविशों का सुबूत दिया और इसी अकैडमी की तहरीक और कारनामों को देख कर हमारे मदरसा फैजुल उलूम के तलबा में भी इशाअती खिदमात का जोश व जज्बा पैदा हुआ। लेकिन इतना बड़ा काम उनके बस का नहीं था मगर उस्तादे गरामी हजरत मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्याही दामत बरकातुहुम का बहुत बड़ा एहसान है जिन्होंने इस मकसद की तकमील पर उन्हें ढारस बंधाई और आला हजरत की किताब 'जुमलुन्नूर फी नहयितिसाए अन जियारतिल कुबूर' जिसे आज आम लोगों को पढ़ने में दुशवारियों का सामना करना पड़ता है। इसमें अरबी मजामीन के तर्जुमा के साथ ही जरूरी जगहों पर हाशिया से मुजय्यन करके इस किताब की कद्रो कीमत दोबाला कर दी। नीज हम जुमला मुदरसीन द असातजा के शुक्र गुजार हैं जिन्होंने अपने मुफीद मशवरो और मौला तआवुन से हमारे हाथों को मजबूत फरमाया।

अब आखिर में इस किताब से इस्तिफादा करने वाले तमाम हजरात से अपील है कि अपनी मखसूस दुआओं में मजलिसे इशाअते तलबा फैजुल उलूम को न भूलें और उनकी तरक्कीए दर्जात की दुआयें करते रहें।

वस्सलाम

अहमदुल कादरी भीरवी  
मुतअल्लिम मदरसा फैजुल उलूम  
मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ  
(8 रजब सन् 1400 हि. शम्बा)



## मुतर्जिम की बात

इस्लाही अदब में इमाम अहमद रज़ा मुहम्मद वरेलवी की इस किताब को अव्वलियत का दर्जा हासिल है आज कल जो कुछ खानकाहों और मजारों पर अफआले शनीआ हो रहे हैं। उनको देखकर इमाम अहमद रज़ा से गैर मानूस तबका उसको इमाम अहमद रज़ा का नज़रिया तसख्खुर करता है और उसी को बुनियाद बनाकर आप पर मुफसिद व बिदअती होने का इल्जाम आइद करता है। यह मुग़ालता उसको महज़ इसलिये हुआ कि उसने कभी इमाम अहमद रज़ा की किताबों से रुजूअ करने की कोशिश न की। वरना आज उम्मत मुस्लिमा से इन्तिशार व इफतिराक की खलीज काफी पट चुकी होती और दुनिया दिन के उजाले और अपने माथे की आँखों से मुशाहिदा करती कि इमाम अहमद रज़ा क्या थे? और इस बात का इकरार करने पर मजबूर हो जाती कि इमाम अहमद रज़ा एक जय्यद अबकरी आलिमे दीन थे उनकी जिन्दगी का बतीरा इस्लाह उम्मत ही था न कि बिदअतों व मुफसिदात को फरोग देना, आज भी उनकी किताबें, उनकी तहरीरें, उनके नज़रियात की तर्जुमान हैं और उम्मत मुस्लिमा के उन अफराद से चीख चीख कर मुतालबा कर रही हैं कि ऐ मुझसे नामानूस लोगो मुझको पढ़ने की कोशिश करो। हकीकत तुम्हारी समझ में खुद आ जायेगी। भला हो उस नये तबक़े का जो इमाम अहमद रज़ा पर तहकीक व तफहहुरा का काम कर रहा है और उनके नज़रियात को नये नये गोशों से उजागर करके अपने और पराये तक पहुंचा रहा है। खुद इस बन्दए नाचीज़ ने एक तहकीकी मकाला "इस्लाही अदब में इमाम अहमद रज़ा की सई" के नाम से कलम बन्द किया था जो सन 1992 के सालनामा मअरिफे रज़ा कराची पाकिस्तान से इशाअत पज़ीर हुआ था। जिसको बाद में लखनऊ के एक जय्यद आलिमे दीन हज़रत कारी मुहम्मद अहमद ने कुतुब खाना भीनाइया लखनऊ से किताबी शकल में शाय्या करके उम्मत मुस्लिमा के हर फ़र्द तक पहुंचाने की कोशिश करके मेरी दिली ख्वाहिशों का एहतिराम किया। अल्लाह तआला हु जूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल उनको खूब खूब नेकी दे आमीन।

इसके बाद बन्दा इस्लाही अदब के हवाले से इमाम अहमद रज़ा पर एक मुफस्सल किताब बनाम "इमाम अहमद रज़ा का नज़रिया खानकाह" लिखने का इरादा रखता है। कारईन किराम से गुज़ारिश है कि इस नेक काम की तकमील व तअमील के लिये दुआयें फरमायें, आमीन।

फकत

डा. मीलाना सिराज अहमद कादिरि बस्तवी

(एम. ए. पी. एच. डी.)

अभिसूचना इकाई

पुलिस अधिक्षक कार्यालय, बस्ती



## नूर के जुम्ले औरतों को जियारते कुबूर से रोकने के बारे में

رَحْمَةُ اللهِ وَرَضِيَ عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

मसला— मौलवी हकीम अब्दुरहीम साहब मुदरिस अब्बल मदरसा कादिरिया अहमदाबाद (गुजरात) मुहल्ला जमालपुर, 28 सफर सन् 1339 हिजरी—

मौलाना मौसूफ ने एक रजिस्ट्री भेजी जिसमें बहरुराईक व तसहीहुल मसाइल मौलाना फजल रसूल साहब रहमतुल्लाहि अलैहि के हवाला से औरतों के लिए जियारते कुबूर को जाने की इजाजत पर जोर दिया गया था उनको यह जवाब भेजा गया।

### औरतों के लिए जियारते कुबूर की मुमानअत

अल—जवाब:— मौलानलमुकर्रम मौलवी हकीम अब्दुरहीम साहब जीद करमुकुम अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु।

आपकी दो रजिस्ट्रियां आयीं तीन महीने से जाइद हुए कि मेरी आंख अच्छी नहीं थी। मेरी राय इस मसले में खिलाफ पर है। मुद्दत हुई इस बारे में मेरा फतवा तुहफ़े हनफिया में छप चुका। मैं उस रुखसत को जो बहरुराईक में लिखी है मान कर नज़र बहालते निसा सिवाए हाज़रिए रौज़ए अनवर कि वाजिब या करीब बवाजिब है। मजाराते औलिया या दिगर कुबूर की जियारत को औरतों का जाना बइतिबाए गुनिया अल्लामा मुहक्किक् इब्राहीम हलबी हरगिज़ पसन्द नहीं करता खुसूसन इस तूफ़ाने बे तमीज़िए रक्स व मज़ामीर व सुरुद में जो आजकल जुहहाल ने आरासे तय्यबा में बरपा कर रखा है। उसकी शिरकत तो मैं अवाम रिजाल को भी पसन्द नहीं रखता न कि वह जिनको अंजशा रजियल्लाहु तआला



अन्हु की हुदी खानी व-इलहाने खुश पर औरतों के सामने मुमानअत फरमाकर उन्हें नाजुक शीशियाँ फरमाया। वस्सलाम मौलवी साहब ने दुबारा रजिस्ट्री भेजी जिस पर यह जवाब इरसाल हुआ।

मसला:- अज अहमदाबाद गुजरात मुहल्ला जमालपुर मुरसेलह मौलवी हकीम अब्दुरहीम 13 रविउल आखिर सन 1939 हिजरी।

मखदूमी मुकरमी मुअज्जमी जनाब मौलाना साहब दाम मुहब्बतकुम

बाद सलामुन अलैकुम वरहमतुल्लाहि वबरकातुहू के वाजिह राय आली हो कि मुहब्बतनामा मौसूल हुआ। फतवा को आपके देखा। हजरत मौलाना मुझे आप इस मसले में समझाइये कि मस्जिदे नबवी में तीन सौ मर्द और एक सौ सत्तर औरतें थीं ये मुनाफिकीन आखिरी सफ में खड़े हुए थे और औरतों को झांकते बहकाते थे। नमाजे फज्र व इशा में औरतें तवज्जोहे अनवारे हकीकते मुहम्मदी व हकीकते कुरआन के लिए हाजिर होती थीं तो मुनाफिकीन की नालाइक हरकत का इन्तिजाम खुदाए तआला और कुरआने अजीम ने यह न किया कि मुनाफिकीन और फैज लेने वाली औरतों को यह हुक्म दिया होता कि दोनों मस्जिदे नबवी में जमा न हों और फैज रिसानी औरतों की इस बहाने से बन्द न हुई। बल्कि इन्तिजामे फैज रिसानी यह हुआ कि

لَقَدْ عَلِمْتَا  
الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ  
يَحْشُرُهُمْ إِنَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ और इन्तिजाम

हजरत नबी अलैहिस्सलाम ने यह किया-

خَيْرَ صُفُوفِ الرِّجَالِ أَوْ لَهَا وَشَرُّهَا أَخْرَاهَا وَخَيْرَ صُفُوفِ النِّسَاءِ  
إِخْرَاهَا وَشَرُّهَا أَوْ لَهَا मस्जिद में औरतों की नमाज बन्द हुई।  
इसको बन्दा मानता है। फैजे हकीकते मुहम्मदी व हकीकते कुरआन



लेने को बापदा पाँच दस औरतें मुहल्ला की मिलकर मुशिंद के मकान पर जायें। और मुशिंदे तरीकत मुरतइश और शेख फानी पर्दा में बैठा कर उनको तबज्जोह हकीकते मुहम्मदी और हकीकते कुरआन की दे। उस पर हुक्मे हुर्मत लगाना गलत और फैंजे मुहम्मदी का मुकाबला और मूरिद **يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نَوَارَ اللَّهِ بِكُفْرِهِمْ** बनना है। शेखे तरीकत तो **إِنَّمَا أَعِزُّهُمُ الْإِسْلَامَ** में जो अमानत है उसको जाकिरात के सीने में बा पर्दा बैठा कर तबज्जोह देकर जमाता है और यह उस अमानत की जड उखेड़ता है। यह फैंज जड उखाड़ने वाले को बे-बकार करके उखाड़ देगा। मुहम्मदिल मशरफ सुन्नते हजरत नबी अलीहिस्सलातु वस्सलाम पर अमल करता है। हजरत नबी अलीहिस्सलातु वस्सलाम ने औरतों को तबज्जोह दी। अब्बल मुरीद करके यह भी औरतों को मुरीद करके तबज्जोह देता है। तरीकए आलिया कादिरिया की तबज्जोह कलिमए तय्यबा के जिक्र की होगी। अब औरतों को पर्दा में बैठा कर जिक्र कलिमए तय्यबा की बताई जायेगी। जब इल्लल्लाह कत्ब पर मारना सिखाया जायेगा। पर्दा में औरत खलीफा मुशिंद तरीकत की बैठकर जिक्र कलिमए तय्यब की सिखाता है और मुशिंदे तरीकत ऊँच नीच समझाते हैं। यहां खलवते अजनबिया का हुक्म नहीं लगता यह जलवत है जबलत में फैंज रिसानी तरीकए आलिया कादिरिया की होती है और इसी तरह इस मजलिस में तरीकए नक़्शबन्दिया मुजदिदिया की तबज्जोह भी औरतों को दी जाती है।

बरेली में हाजिरी का कई बार मौका हुआ है। वहां यह अमल देखने में नहीं आया। न वहां सुना कि कोई मशाइख यह करते हैं। हमारे यहां डोली भियाना मुश्किल से मिलता है। गुरबा व मसाकीन में कुदरत इन सवारियों में बैठने की नहीं और न कुरआने अजीम ने डोली व भियाना का हुक्म दिया है। **يَذَرْنَهُنَّ عَلَىٰ ظُهُورِهِنَّ مِنْ خَلْفَةٍ**



और قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَحْضُرْنَ مِنْ  
 इस पर्दा पर अहमदाबाद की  
 أَبْصَارِهِنَّ

जाकिरात का अमल है। وَالْيَظُرْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ

उमदतुल कारी शरह बुखारी जिल्द नं. 4 सफ़हा 78

حاصل الكلام من هذا كله ان زيارة القبور مكروهة للنساء بل حرام  
 في هذا الزمان لاسيما نساء مصر، لان خروجهن على وجه الفساد  
 والفتنة وانما رخصت الزيادة لتذكرا مرامرا لاخرة وللاعتبار بمن  
 مضى وللتزهد في الدنيا



यह हुक्म मिस्र की बगाया मुगत्रिया दल्लाला का है। इस  
 हुक्म को नेक बख्त औरतों पर लक्ष्य गलत है।

की शरह उमदतुल कारी जिल्द 3 सफ़हा 30

में है। لُوَادِرُكَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

بعضهن يغنين بأصوات عالية مطربة ومنهن صنف بنايا احدثت النساء

अहमदाबाद में तीन कोस दरगाह हजरत गंज अहमद  
 रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की है। मकान बहुत पुर-फजा है और  
 तालाब संगीन है। वहां धुनिये की कौम और लकड़ बेचने वाली कौम  
 की औरतें लहंगा साड़ी पहन कर जाती हैं और गर्बे गाती हैं और  
 उनकी कौम की जियाफतें होती हैं। उसमें वह औरतें गर्बे गाती हैं।  
 हल्का औरतों का बन जाता है और ताली बजाती हैं और फिरती  
 जाती हैं रंडियों की तरह गीत गाती जाती हैं। उन पर بل حرام  
 का हुक्म बराबर उम्दा तौर पर

धिस्यो है और गुनियतुल मुसतमली के सफ़हा 595 में  
 और जो औरतें وان يكون في زماننا للتحريم لما في خروجهن من الفساد  
 कव्वाली रंडियों की और कव्वाली मर्दों की सुनने जाती हैं। उनको  
 जियारते कुबूर को जाना हराम है।

उनके हराम होने से जाकिरात और फ़ैज लेने जाने वाली



आरत को क्या नुस्खाने अगरने एसी आरत हनन न एत ॥ दस हजार आदमियों ने कुत्त आरत नजन और ॥ आरत की दिरयानी पकाई है और एक न बदरे के गारन की दिरयानी पकाई है। विरयानियों पर हुक्म हुर्मत और हुक्म ॥ अरत गलत, और कुत्त की विरयानी पर हुक्म हुर्मत और दकरी की दिरयानी पर हुक्म हिल्लत सही दोनों का हाम जुदा मुफती को दयान करना पड़ेगा।

افمن كان مؤمنا كمن كان فاسقا الا يستوون امر نجعل المتقين كالنجار  
असाफ और भाइया न जाहिलियत में जिना किया और कदरते इलाहिया ने दोनों का सम्भर का दिया ऐसे मुतादर्य मदान में दोनों ने खयास्त की ॥ यो काई जफने हामन तयदीन ग खदीस अमल से पेश आये तो दार ॥ यो नदी न की खयास्त को देखकर और उसमें इस्तिनाद करके जानना के हामन जाहिलियत हजरत नवी अलीहरसलतु वसालाम को बदल लाने का काम जारी कर दिया जायगा, हराये न नये।

हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन ॥ कश्मी के नये मुतादर्य में रली दीवार में कलाम मजीद रखा है उस दीवार के पीछे लाजा बंद कर तयज्जोह लेती है जिफ्र फिफ्र मयाकवा करती है ॥ दुर्ग नौउ कर आती है ॥ इखतिनात मदी और नरत का यहा विन्दुल नये ॥ अब यह औरते नुरुज्जाह दिल में भरन के लिए गाजिर हाती है ॥ यह फेज रिसानी हकीकत मुहम्मती की और न का ख्वाजा गरीब नवान बुदिसा शिरहुल अजीज करत है और इजफ ॥ म नह दूरात ॥ फे लाखो दोसो से फेज लेने वालो को आप दूरा लेत है यह नमाह मकामे कज्वाली से दूर है और नमाजे फज्र से दशराफ तक और मगरिव और इशा के बीच न इस पर्दे वाले मकाम में औरते जमा हो कर फेज लेती है और उस वक्त नुकसान कज्वाली का गिल्लुन नही और यह औरत नेक बख्त पदानशीन कुर्का जोड़कर आने वाली हैं आपने इसको आखां से नहीं देखा और मैंने इसको आखां से देखा



الحمد لله الذي هدانا لهذا الذي كنا لنهتدي لولا أن هدانا الله

والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

والله اعلم بالصواب

والله اعلم بالصواب

والله اعلم بالصواب

والله اعلم بالصواب

والله اعلم بالصواب

والله اعلم بالصواب

والله اعلم بالصواب











[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 श्री कृष्णाय नमः ॥

[illegible][illegible]

أَمَرَ أَنْ يُخْرِجَ الْحَيَّ مِنْ  
بَيْتِ الْعَرَبِيِّ وَذَوَاتِ  
الْأُخْدُومِ فَيَسْتَبْدِرَ جِبَاعَةَ  
الْأَسْيَافِ وَدَعَا لَهُمْ وَتَعْتَزِلَ

हम हुयम दिया गया है। हम हेन  
लाइया को ईदत को देना निजम ने  
और पर्दा वालियों को। तो यक  
मुसलमानों को अगस्त और  
उनकी दुआ में शरीर है और न  
वाला उनही नाम जो यह स  
कनार रह। एक औरत ने अर्ज

अपने घर के सामने एक छोटी सी झील थी। उस झील में बहुत सारे मछलियाँ रहती थीं। एक दिन उस झील में एक बड़ा सा मछली मर गई। उस मछली के पेट में एक छोटी सी बच्ची मिली। उस बच्ची को उस मछली के पेट में से निकाला गया। उस बच्ची का नाम 'मिमी' रखा गया। मिमी बहुत ही प्यारी और चालाक थी। उसने अपने घर के लोगों को बहुत सारे मजाकें उड़ाईं।



فَمِنْهُمْ مَنْ يَمُوتُ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُ الْوَيْلُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَحْيَىٰ  
أَمْرًا لَهُمْ يَوْمَ يَأْتِيهِمْ الْوَيْلُ فَتَأْتِيهِمْ  
سُحُبٌ مُّجْتَمِعَةٌ فَيَكُونُ فِيهَا  
أَكْبَادُ ذِي الْقُرُونِ فَسَاهَا  
مَكْرُمٌ يُفْتَنُ بِهَا الْعَالَمُ

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।  
 1. निम्नलिखित में से एक को चुनिए।  
 2. निम्नलिखित में से एक को चुनिए।  
 3. निम्नलिखित में से एक को चुनिए।  
 4. निम्नलिखित में से एक को चुनिए।  
 5. निम्नलिखित में से एक को चुनिए।

१५५५  
 अंगरेजों का युद्ध किंग्स का  
 मालिक से न मिलना

[illegible][illegible]

के उमर से सिवाय है। जैसा कि



मानविकी, कला और समाज में शिक्षण के लिए शिक्षण माहिरता

दुर्गे मुख्तार की इबारत आप स मसखो न होगी कि ...

يَكْرَهُ حُضُورَهُنَّ الْجَمَاعَةَ  
وَلَوْ لَجُمُعَةٍ وَعِيدٍ وَعُظٍّ  
مُطَاتٍ وَلَوْ عَجُوزٌ أَيْلًا عَلَى  
النِّمَازِ هَبَ الْوَقْفَى بِهِ لِفَسَادِ  
الرَّمَانِ

फरसादे जमाना के बाइस जमाअत में औरतों की हाजिरी मुतलकन ममनूअ (मकरूहे तहरीमी व नाजाइज़) है। अगरचे जुमा या ईद या वज़ा के लिये हाजिरी न। अगरचे बुढिया की हाजिरी शव हो को हो यह उस मजहब के मुताबिक है। जिस पर फतवा है।

इसी तरह और कुतुबे मुअत्तभिदा में है। अइम्माए दीन ने जमाअत व जुमा व ईदैन दर किनार बज्ज की हाजिरी' से भी मुतलकन मना फरमा दिया। अगरचे दुहिया हो, अगरचे रात हो,

[illegible]







हवात और इति औरतों के लिए जवाब  
के लिए जवाब के लिए जवाब

फिर फरमाया:-

فَاحْتَجِرْ بِهِ عَلَمَاءَنَا وَمَنْعُوا  
الشَّوَابَ عَنِ الْخُرُوجِ مُطْلَقًا.  
أَمَّا الْعَجَائِزُ فَمَنْعَهُنَّ أَبُو حَنِيفَةَ  
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ عَنِ الْخُرُوجِ  
فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ دُونَ الْفَجْرِ  
وَالْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ وَالْفَتْوَى  
أَيُّومًا عَلَى كَرَاهَةٍ حُضُورِهِنَّ  
فِي الصَّلَاةِ كُلِّهَا الظُّهْرِ وَالْفَسَادِ.

इससे हमारे उलमा ने  
इस्तिदलाल किया और जवान  
औरतों को निकलने से मुतलकन  
मना फरमा दिया। रही बूढ़िया तो  
इमाम अबू हनीफा रजियल्लाहु  
तआला अन्हु ने उन्हें जुहर व अस्त्र  
में निकलने से मना किया फज्र व  
मग़रिब और इशा से नहीं, मगर  
आज फ़तवा इस पर है कि बूढ़ियों  
की हाजिरी भी तमाम नमाज़ों में  
मकरूह है। क्योंकि अब फ़साद  
नुमाया है।

हवात और इति औरतों के लिए जवाब  
के लिए जवाब के लिए जवाब

उसी औ-मै : जल्द सोम में आपकी इबारतें मनकूला से एक  
राफहा पहले है

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ رَضِيَ  
اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ أَلْأَمْرُ  
عَوْرَةً وَأَقْرَبُ مَا تَكُونُ  
إِلَى اللَّهِ فِي قَعْرِ بَيْتِهَا فَإِذَا

यानी हजरत अब्दुल्लाह इब्ने  
मसऊद रजियल्लाहु तआला अन्हु  
फरमाता औरत सराफा शर्न की  
चीज है सबसे ज्यादा अल्लाह  
अज्ज व जल्ल से करीब अपने  
घर का तह में होती है और जब



خَرَجَتْ اسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ  
وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ  
تَعَالَى عَنْهُمَا يَقْوَاهُ جَعِبَ  
النِّسَاءَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ  
يُخْرِجُهُنَّ مِنَ الْمَسْجِدِ وَ  
كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَمْنَعُ نِسَاءَهُ  
الْجُمُعَةَ وَالْجَبَاعَةَ

बाहर निकले शैतान उस पर  
निगाह डालता है और हजरत  
अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु  
तआला अन्हुमा जुमा के दिन खड़े  
होकर कंकरियां मार कर औरतों  
को मस्जिद से निकालते और  
इमाम इब्राहीम नखई ताबई  
उस्ताजुल उस्ताज इमाम आजम  
अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआला  
अन्हु अपनी मस्तूरात को जुमा व  
जमाअत में न जाने देते।

जब उन खैर के ज़मानों में, उन अज़ीम फ़यूज़ व बरकात के  
वक्तों में औरतें मना कर दी गयीं, और काहे से? हुज़ूर मसाजिद  
व शिरकते जमाअत से। हालांकि दीने मतीन में उन दोनों की शदीद  
ताकीद है तो क्या इन अजमन्हे शुरु (खराबियों बुराइयों के  
जमानों में) इन कलील या मौहूम फ़यूज़ के हीले से औरतों को  
इजाजत दी जाएगी? वह भी काहे की? जियारते कुबूर को जाने  
की! जो शरअन मुअक्कद नहीं और खुसूसन इन मेलों ठेलों में जो  
खुदा नातरसो ने मजाराते किराम पर निकाल रखे हैं, यह किस  
क़दर शरीअते मुत्तहहरा से मुनाकज़त है (बाहम एक दूसरे के  
ख़िलाफ़ बात करना) है।

खराबी के असबाब को दूर करना अहम है

शरअ मुत्तहहर का काइदा है कि जलबे मसलिहत (खूबी पैदा  
करने वाली चीज़ लाना, खूबी का सबब हासिल करना) पर सलबे  
मुफसिदा (बुराई का सबब दूर करना) को मुकदम रखती है।

دَرْعُ الْمَفَاسِدِ أَهَمُّ مِنْ  
جَلْبِ الْمَصَالِحِ

खराबी के असबाब दूर करना खराबी  
के असबाब लाने से अहम है।

जब कि मुफसस इससे बहुत कम था इस समय के न पाने का  
से अहमदर दीन इसमें आजमद र हिंदी ॥ १ ॥ का दाखल न किया  
दिया और औरतो की निरन न बनाय कि ॥ २ ॥ इस समय  
फारसि वत न आये वलिक ॥ ३ ॥ हुसैन नाम के राजा जिसने जायद का  
में लतलतना ॥ ४ ॥ और ॥ ५ ॥ लतलतना ॥ ६ ॥ गरी ॥ ७ ॥

دَرَعَالِهَقَسِيْدِ اَقْمِيْن

॥ क्या जो ईमान बला है ॥  
इस वला हो जायगा न व हुसैन  
है।

॥ हम परहेजगारों को शरीर वे  
मुझे के बराबर ठहरा दें।

॥ १ ॥ के मुफसस ॥ २ ॥ बहुत कम (सब्त हर) है इस  
मसलिक ॥ ३ ॥ गीज से राव न वरा न ली जन ॥ ४ ॥ और औरतो की  
किस्में वला वर ॥ ५ ॥ जायगी।

राजाद व परतद वन्य अगर मुजमर (दि न दी दुरखी और  
खराजी पोरी दा दी न है) और दाव के गिफ लवकी लदान दुरा दी  
और मुहिकी मुवकिल (हक वाला और वाति ॥ १ ॥ मसलिक ॥ २ ॥

१ इसमें आजम अहमद न आजम दीन न विले ॥ १ ॥ नदलत ॥ २ ॥ नदलत ॥ ३ ॥  
शानिद है जो मसलिक ॥ ४ ॥ नदलत ॥ ५ ॥ इसमें भी है ॥ ६ ॥ इसमें ॥ ७ ॥ इसमें ॥ ८ ॥  
मुहमद विले अलतलन ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ मुहमद ॥ ११ ॥ इसमें ॥ १२ ॥ इसमें ॥ १३ ॥  
विले है ॥ १४ ॥ इसमें ॥ १५ ॥ इसमें ॥ १६ ॥ इसमें ॥ १७ ॥ इसमें ॥ १८ ॥  
जब इसमें ॥ १९ ॥ और इसमें मुहमद को एक लता ॥ २० ॥ लता ॥ २१ ॥ लता ॥ २२ ॥  
कहते हैं ॥ २३ ॥ यह दोन ॥ २४ ॥ इन न लता व ॥ २५ ॥ लता ॥ २६ ॥ लता ॥ २७ ॥  
है ॥ २८ ॥ अब इसमें आजम और इसमें अलतलन ॥ २९ ॥ लता ॥ ३० ॥ लता ॥ ३१ ॥  
विले है ॥ ३२ ॥ इसमें मुहमद ॥ ३३ ॥ लता ॥ ३४ ॥ लता ॥ ३५ ॥ लता ॥ ३६ ॥  
नदलत ॥ ३७ ॥ लता ॥ ३८ ॥ लता ॥ ३९ ॥ लता ॥ ४० ॥ लता ॥ ४१ ॥ लता ॥ ४२ ॥  
है ॥ ४३ ॥ लता ॥ ४४ ॥ लता ॥ ४५ ॥ लता ॥ ४६ ॥ लता ॥ ४७ ॥ लता ॥ ४८ ॥

इसमें अब दाखल ॥ ४९ ॥ लता ॥ ५० ॥ लता ॥ ५१ ॥ लता ॥ ५२ ॥ लता ॥ ५३ ॥  
शानिद ॥ ५४ ॥ लता ॥ ५५ ॥ लता ॥ ५६ ॥ लता ॥ ५७ ॥ लता ॥ ५८ ॥ लता ॥ ५९ ॥  
लता ॥ ६० ॥ लता ॥ ६१ ॥ लता ॥ ६२ ॥ लता ॥ ६३ ॥ लता ॥ ६४ ॥ लता ॥ ६५ ॥



सलाह न फायदे की तरह है। वह कि वह कुछ दूर तक नहीं रुमूसन  
 क्या जानकर, गुमसल और न की दिल में लकड़पु (क) नियम  
 इन्कलाब न लकड़पु पकड़ना फिर जानने की नये दूत अमाद  
 व लिहाजा।

**अपने घर पर परीक्षण करते नज़र आसकत हैं**

رُوَيْدَنَ أَنْبَشَةَ رَفَقًا  
 يَا فَوَائِيسَ

अशिया क राय नगी की जातिर  
 अन्जली सवा रमा आहरता  
 नलाओ।

इसीद हुआ कि मी नमूना फल एरमाद कर अमक ह  
 न कि ही मल, नला आन न हो कलप २३३ है। जब हरम  
 म्वास, लकड़पु उहाय नगी जब लासी द न लकड़पु व दिली।

وَجَدْتُهُمُ الشَّيْطَانِ لَا يَكْرُورًا

कर होता न लकड़पु नगी न म  
 नार करव का।

विनामुरस जबकि जल ग्रन फलद मालेव और सलाह  
 नातिर है हरम गुला म म्वास की लकड़पुल (अमक नलग व रमा)  
 वल कर लकड़पु म्वास नगी नगी मल्लि म्वास नगी दी। और  
 जलकी ररसी वलली (जल करव दरम नलग)।

इसाम मन्दिरी जल अन्जली इन्कलाब फलद न दलीर म  
 फरमाते हैं

الَّذِينَ يَذُوقُونَ آثَامَ السَّيْلِ لَا يَفْقَهُونَ  
 فَيْسَ فَرِيضِي أَنْفُطَابَ غِبَارِ حِمٍ  
 وَلا يَذْكُرُونَ قَيْدًا فِي الْخَوَارِ

वसील नगी इन्कलाब और  
 दामनान नगी लकड़पु म्वास  
 नगी नगी नगी नगी नगी नगी  
 एलद नगी नगी नगी नगी नगी  
 नगी नगी नगी नगी नगी नगी

1 अल्लामा जमालुद्दीन इब्न मुसल्लिह की हकूमत है। यह हसन पाकि म्वास नगी  
 से म्वास अल्लिह है। म्वास नगी म्वास नगी म्वास नगी म्वास नगी म्वास नगी  
 भी वल नगी है। म्वास नगी नगी नगी नगी नगी नगी नगी नगी नगी नगी नगी

لَا نَشَانُ النَّفْسِ الدَّعْوَى  
الْكَادِبَةَ وَإِنَّمَا الْكَذِبُ مَا يَكُونُ  
إِذَا حَلَفْتَ فَكَيْفَ إِذَا ادَّعَيْتُ.

क्योंकि नफ्स का काम ही झूटा दावा करना और यह सबसे बड़ा झूटा उस वक्त होता है जब कसम खाए तो जब यह महज दावा करे उस वक्त क्या हाल होगा?

सादाते सलासा अल्लामा हलबी व अल्लामा तहतावी व अल्लामा शामी फरमाते हैं—

وَهُوَ وَجِيهٌ فَيَنْتَقِ عَنِ  
الْكِرَاهَةِ وَيُتْرَكُ التَّقْلِيدُ  
بِالنَّوَثِقِ.

और यह कलाम वजीह और उम्दा है तो साफ मकरूह होना कहा जाएगा और अपने ऊपर एतमाद की कैद (लगाकर गैर-मकरूह बताना) छोड़ दिया जाएगा।

किसी गुनाह का इरादा भी खतरनाक है। इन सबके पेशे नजर उलमा को इसमें इस्तिस्नाफ हुआ कि बैरुने हरम का आदमी अगर हरम पाक में सुकूनत इस्तिथार करना चाहे तो क्या हुक्म है?— बाज शाफईया ने बयान किया कि मुस्तहब है। अलबत्ता अगर गुनाह में पड़ने का ज़न्ने गालिव हो तो नहीं। यही इनाम अबू गुरूफ व इनाम मुहम्मद का मजहब है। इमाम आजम और इमाम मालिक के नजदीक मकरूह गैर-सीमें है— साहिबे फतहूल कदीर ने अकवाले अइम्मा व उलमा और अहदीन सलब व उकाब लिखने के बाद फरमाया हा अल्लाह के कुछ नेक बरगुजादा मुग्यलिस कन्द ऐस हैं जो सुकूनते हराम के अहल और हसनत और सलवात के इजाफा की पत्ती नत इस एहतियात के साथ हासिल करने वाले हैं कि उनसे कोई ऐसी बात न हो, जिससे उपाही ने किया बरबाद हो जाये। इस इबारत के बाद फरमाया अगर ऐसे लोग कम से कमतर हैं। अल्ला

फाजिले बरलती अलैहिर् रहम का इस इबारत से इस्तदलाल यह है कि फिक्ही अहकाम में गालिव व अक्षर का लिख ज होता है। यहाँ कि दिल की अच्छाई—बुराई पोशीदा चीज है और नफ्स जो सलाह व नेकी और खतरात को बसलामत उबूर कर लेने का मुद्ई हो सरात झूटा है।

2 साहिबे दुर्रे मुख्तार अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अली हसकफी ने फरमाया था (दुर्रे मुख्तार जिल्द 1 सफहा 112 मतबअ नवल किशोर लाहौर) मदीना में सुकूनत इस्तिथार करना मकरूह नहीं यँही मक्का में उसके लिए जो अपने नफ्स पर भरोसा रखता हो। इसी इबारत के पेशे नजर दुर्रे मुख्तार के तीनों मुहशरी उलमाए सादात ने फतहूल कदीर की मजकूरा वाला इबारत नकल करके फरमाया कि जब नफ्स का यह हाल है तो उसका क्या



## जैक और बल से फर्क मुखिल है

मुत्तका शरहे मुत्तका में है।

فَنَادِرٌ وَجِيهٌ قَيْتَصُ  
فَنَادِرٌ فِي هَذَا الزَّمَانِ  
فَلَا يَفْرَدُ بِحُكْمٍ لِحَرْجِ التَّمِيْزِ  
بَيْنَ الْمَصْلِحِ وَالْمُفْسِدِ -

रहे' वह जा उनके दर खिलाफ है  
तो इस जमाने में वह नादिर है  
लिहाजा उनके लिये कोई अलग  
हुक्म न होगा क्योंकि यह इन्तियाज  
करना दुशवार है कि मुरातेह कौन  
है और मुफसिद कौन?

शरहे तुवाब में है।

لَوْ كَانَتْ الْأَيْمَةُ فِي زَمَانِنَا وَ  
تَحَقَّقَ لَهُمْ شَأْنُ الصَّرْحِ وَالْحَرَمَةِ

अगर आइम्मा' हमारे जमाने में  
होते और हमारी हालत की उन्हें  
तहकीक हो जाती तो वह भी  
सराहतन हराम कहते।

भरोसा? लिहाजा सुकूनत हरम की साफ साफ मकरुह क्या जाएगा।

1 यह इबारत नफरत ताजिब इल्म से मु'अल्लिक है। बाप पर न दार न बालिग  
औलाद का नफका वाजिब है। यूँ ही उन नाबालिग औलाद का जो जमाने से आजिज हो  
अगर कोई वाजिब फरजन्द ऐसा है, जो जमाने पर कादिर है। अगर तलवा इल्म दीन में मश-  
गूल है तो उसका खर्च बाप पर वाजिब होगा नहीं? बाप ने कहा वाजिब है और बालिग ने कहा  
नहीं है। जिन जलमा ने दा'वेब कहा बाप ने यह कद जमा दी है कि व गुं'दम सूरत में है  
जब ताजिबे इल्म फरजन्द में क सीरत और बाकई ताजिबे इल्म हो। तब उसका नफका  
बाप पर वाजिब नहीं। सादिये मुनियद व रुनियद व सादिये मुन्नावा फरजन्द है कि अक्सर  
तलवा रुशदो सलाह वाला नहीं और हुस्म अक्सर ही के एतबार से होता है। लिहाजा  
मुतलकन कहा जाएगा कि बाप पर ताजिबे इल्म का नफका वाजिब नहीं। पाजि ने बरेलवी  
का इस्तदलाल बस इतना ही है कि बाप पर अक्सर हुआ करता है। रसा यह कि दोर  
हाजिर में हुक्म क्या होना चाहिए? तो यकिम के खयाल से इसमें तहकीक व तहकीक की  
जरूरत है। क्योंकि अब तलवा की व ई किरने और मुन्नाजिफ हासन है। यूँ ही अब इल्म  
दीन के हालाते जमाने भी मुन्नाजिफ है।

2 मुत्ताअली का शेरहमागुल्लाह जल्ले कह २२ इलाइ उरी 'अब रहरम' का मसल  
से मुतअल्लिक है, सुकूनत हरमैन के बार में फाजिल बरेलवी अले हिर्हना का मुफरसल  
अरबी रिसाला

दखल चाहिए। यह

फतावा रजविया जिल्द चत्तरम में शामिल है।







लइये शतरन्ज वगैरहा अजबल व सोम की इबारात गुजरीं दुरे मुख्तार में दर बारहे दोम है ۞ **فِي زَمَانِنَا لَا شَكَّ فِي الْكَرَاهَةِ**

हमारे जमाने में इसके मकरुह होने में कोई शुक्ल नहीं।

काफी व जामेउरुमूज व रहुल मुहतार में दरबारहे अखीर है।

**هُوَ حَرَامٌ وَكَبِيرَةٌ عِنْدَنَا**

हमारे नज़दीक तो शतरंज खेलना हराम और गुनाहे कबीरा है और

भी कर बैठेग। नतीजतन सबाब जाया गुनाह लाज़िम और मुल्त अली क़री रहमतुल्लाह अलैह ने तो यह फरमाया कि अगर अइम्मए किराम हमारे जमान में होते और हमारा हाल उस पर खुदा ता'अल्लम हज़रात देना इस्तेलाफ सुकूनते हरम को साफ-साफ हराम कहते।

JAMINATI KALIM?

3 शहर में आम लोगो के नहाने के लिए गर्म पानी बगैरह के इन्तजाम के साथ मकानात बनो होते हैं, जिन्हें हम्माम कहते हैं उन्हें हम्मामों में औरतों का नहाना न जाइज कहा गया क्योंकि वहाँ पे पर्दगी का लाजमी अन्देरा बल्कि अक्सर बकूअ है यहाँ भी अक्सर ही के लिहाज से आम हुक्म कर दिया गया है। इस बारे में आगे दुरे मुख्तार की इबारात है।

4, नपकए तालिबे इन्न — बाप पर वालिग तालिबे इन्न फरजन्द का नपका वाजिब है या नहीं? इससे मु'अल्लिक दुरे मुन्वाय' की इबारात गुजरी जिसमें अक्सर ही के हालात की बुनियाद पर हुक्म जारी किया गया।

5 शतरंज खेलना बाज लोगो ने इस लिहाज से इसको जाइज कहा कि इससे वारीक - बीनी व दूर - अन्दरी पैग हाती है। जमीन उसनइले और चलाने में मदद मिलती है यह हुक्म भी इस शर्त के साथ कि उसमें हार-जीत न हो, कोई नमाज वक़्त से मुअख़र न हो, कुदूस मोई और किसी ममनूअ चीज का इस्तेकाब न हो, हमारे अइम्मए किराम ने अहादीसे करीम और हाज़ाते अक्सर के देश नज़र यही हुक्म दिया कि शतरंज खेलना मुत्लकन हराम और गुनाहे कबीरा है। फाजिले करेलजी कुदिसा सिरहू ने इससे मु'अल्लिक काफी जामेउरुमूज और रहुल मुहतार की इबारात पेश की।

हमने कलाम यह कि हुक्म ग़िदर बरख़्बार अक्सर होता है और जहाँ औरतों के लिए जियारते कुदूर को जाइज कहा गया है तो अक्सर हालात व अवारिज के पेशे नज़र नहीं। बल्कि मोह हुक्म पर नज़र करते हुए कि बच्चे की जियारत अच्छी चीज है। दुनिया त' ग़वत करती है भ्रष्टियत को याद दिलाती है यह इन कैदों के साथ कि वे सखी आह व ज़रो व गरह ममनूअत का इस्तेकाब न करें और जहाँ नाजाइज कहा गया तो जमाना और औरतों के ममूमें हालात पर नज़र करते हुए कि वही हुक्म अक्सर ही के लिहाज से होता है तो फतव इन्हीं पर होगा कि औरतों के लिए जियारते कुदूर को जाना मुत्लकन न जाइज है



وَفِي إِبَاحَتِهِ إِعَانَةُ الشَّيْطَانِ  
عَلَى الْإِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِينَ

उसे जाइज रखने में शैतान को  
इस्लाम और मुसलमानों के  
खिलाफ मदद देना है।

फिराने वर हजारा या दिल के मुदहार मजदूर

इस तकरीर से उसका जवाब बाजेह हो गया कि अगरचे ऐसी  
औरत हजारा में एक हो, जैसी हजारा में हजार हो जब भी माअतबर  
नहीं कि हुकम किक्ह व—एतिवारं गालिय (अक्सर) क होता है, न  
कि हजारा में एक वहीं से बिरयानियों का हॉल खुल गया। दस  
हजार बिरयानियों मुरदार मंटे, दुन्द, बकरे की हों और उन में दस  
हजार उन मजदूर (शरओ तार पर जवह किया हुआ) जानवरों की  
मुखतलत (एक दूसरे से मिला हुआ खल्ल मल्ल) हो बीस हजार  
हराम है। यहाँ तक कि इन में तहरी (अपने दिल की राय मालूम  
करना कि किसी दो या चन्द में मुनासेब व लाइक और दुररत क्या  
है।) करके जिसकी तरफ हिल्लत का ख्याल जमे उसे खाना भी  
हराम न कि दस हजार में एक—दुरे मुस्तार में है।

تُعْتَبَرُ الْغَلْبَةُ فِي أَوَانٍ  
طَاهِرَةٍ وَنَجِسَةٍ وَمَيْتَةٍ  
وَذَكِيَّةٍ فَإِنَّ الْأَغْثَبَ طَاهِرٌ  
تَحْذَرُ فِي الْعَكْسِ وَ  
الشَّوَاءِ لَا

पाक व नापाक वर्तना और मुदहार  
व मजदूर जानवरों में गल्ल का  
एतेदार किया जायेगा अगर  
अन्सार पाक हो तो तहरी कर और  
जिगर दिल जमे कि यह पाक है  
तो इसे माल करे। लेकिन अगर  
अन्सार नापाक हो या दोनो दस्तबर  
हों तो कर्ने न करे। क्योंकि इन  
दोनों सुरा में सब नापाक करार  
दिये जायेंगे।

हों। एक हलाल जुदा मुमताज मालूम हो तो करारते हराम

[illegible]

इति श्री भगवत्पुत्राचार्य महाराज कृतं श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ।

...  
...  
...  
...  
...  
...  
...  
...  
...

[illegible]



۱۰۰  
 ۱۰۱  
 ۱۰۲  
 ۱۰۳  
 ۱۰۴  
 ۱۰۵  
 ۱۰۶  
 ۱۰۷  
 ۱۰۸  
 ۱۰۹  
 ۱۱۰  
 ۱۱۱  
 ۱۱۲  
 ۱۱۳  
 ۱۱۴  
 ۱۱۵  
 ۱۱۶  
 ۱۱۷  
 ۱۱۸  
 ۱۱۹  
 ۱۲۰  
 ۱۲۱  
 ۱۲۲  
 ۱۲۳  
 ۱۲۴  
 ۱۲۵  
 ۱۲۶  
 ۱۲۷  
 ۱۲۸  
 ۱۲۹  
 ۱۳۰  
 ۱۳۱  
 ۱۳۲  
 ۱۳۳  
 ۱۳۴  
 ۱۳۵  
 ۱۳۶  
 ۱۳۷  
 ۱۳۸  
 ۱۳۹  
 ۱۴۰  
 ۱۴۱  
 ۱۴۲  
 ۱۴۳  
 ۱۴۴  
 ۱۴۵  
 ۱۴۶  
 ۱۴۷  
 ۱۴۸  
 ۱۴۹  
 ۱۵۰  
 ۱۵۱  
 ۱۵۲  
 ۱۵۳  
 ۱۵۴  
 ۱۵۵  
 ۱۵۶  
 ۱۵۷  
 ۱۵۸  
 ۱۵۹  
 ۱۶۰  
 ۱۶۱  
 ۱۶۲  
 ۱۶۳  
 ۱۶۴  
 ۱۶۵  
 ۱۶۶  
 ۱۶۷  
 ۱۶۸  
 ۱۶۹  
 ۱۷۰  
 ۱۷۱  
 ۱۷۲  
 ۱۷۳  
 ۱۷۴  
 ۱۷۵  
 ۱۷۶  
 ۱۷۷  
 ۱۷۸  
 ۱۷۹  
 ۱۸۰  
 ۱۸۱  
 ۱۸۲  
 ۱۸۳  
 ۱۸۴  
 ۱۸۵  
 ۱۸۶  
 ۱۸۷  
 ۱۸۸  
 ۱۸۹  
 ۱۹۰  
 ۱۹۱  
 ۱۹۲  
 ۱۹۳  
 ۱۹۴  
 ۱۹۵  
 ۱۹۶  
 ۱۹۷  
 ۱۹۸  
 ۱۹۹  
 ۲۰۰

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

فَالصَّاحِبُ الْمُنْتَدِي بِتَرْبِيَةِ

लिए 'जमाऊतों' की हाजिरी

نفس (ب) نفس (ب) نفس (ب)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥

۲۰۰۰

لَهُنَّ حُضُورُ الْجَمَاعَاتِ قَائِمَاتٍ  
 شَرَّاحٌ يَغْنِي الشَّوَابَ فِيهِنَّ  
 وَقَوْلُهُ الْجَمَاعَاتُ يَتَنَاوَلُ  
 الْجُمُعَةَ وَالْأَعْيَادَ وَالْكُسُوفَ  
 وَالْإِسْتِسْقَاءَ وَعَنِ الشَّافِعِيِّ  
 يُبَاحُ لَهُنَّ الْخُرُوجُ قَالَ أَصْحَابُنَا  
 لِأَنَّ فِي خُرُوجِهِنَّ خَوْفَ  
 الْفِتْنَةِ وَهُوَ سَبَبٌ لِلْحَرَامِ وَمَا يَنْطِزِي إِلَى الْحَرَامِ حَرَامٌ فَعَلَى  
 هَذَا اقُولُهُمْ يَكْرَهُ مُرَادُهُمْ  
 يَحَرِّمُ لِأَسِيءٍ فِي هَذَا الزَّمَانِ  
 لِشَيْءٍ وَالْفَسَادِ فِي أَهْلِهِ -

मकरूह है। उस पर बाज नारेहीन  
 न कहा यानी जवान आरता के  
 लिए मुसद्दिक का कौल  
 जमाअतों जुमा, ईदेन, कुसूफ  
 इस्तेसका सबको शामिल है।  
 इमाम शफई से मरदी है कि  
 औरत के लिये जमाअत में आना  
 जाइज है। हमारे लोगों ने कराहत  
 की दलील यह दी है कि औरतों  
 के निकलने में फितने का अन्दशा  
 है और यह निकलना एक हराम  
 काम का सबब है और जो काम  
 हराम तक पहुँचने वाला हो वह  
 हराम ही है इसके पेशे गजर  
 'मकरूह' से हमारे उलमाए  
 किराम कि मुराद "हराम" खाता  
 कर इस जमाने में इसलिये कि  
 अब अहल जमाना में फसाद और  
 बुराई आम है।

फिर उसी सफा पर अब्दुल्लाह इब्ने उतार रजिअल्लाहु  
 तआला तआला का हुक्म कि जिन आदमों का कदर रफा मासक  
 मासक से निकलना न चाहिये, मगर जो इका उन नगई जगई का  
 लगने वहाँ कि मस्तुबा का जन्म न जनरे त म न जान देना जिक्र  
 किया तभी त त द त म इका र गु री कि मीरुत मुमेनीन  
 फारु न आत्म न जानी को हुजर मस्जिद से मना करमाया।



अंगरों के लिए ज़ियारत कब्रों के

मुपादख़्त कायम है

वया गदीना तय्यमा की वह पीकियों जि सलानियात व तावईयात थी और उन इनाम अजल्ला तावई को मस्तूरात मआज़ अल्लाह फितना—गर व अज़ल फस न थीं ? हाश हाशिज नहीं का लल न—जव ! अगर सलान व तावईन किरम को भी कहा जाये कि सबको एक लकड़ी के ल ओर गुनकन व क जार ( कले नमाल, फाजिरो, बद अमलो) का फस न ही किया हाश गुम्ना हाश गुम तो सावित हुआ कि मना जना है । सिर्फ फासिकात से खास नहीं और उनका खुसूसन जिज फरमाकर जनान भिन्न के खराइल गिनाना इसलिये है कि उन पर बदजए औला हराम है, न कि फकत फितना उठान वालेयो को मुमानअत ह, या वह भी सिर्फ मुगुन्निया व दल्लाला को ।

उसी ने आपकी मनकूला इदारते अनी जिल्द वहारुम का मतलब वाज़ेह कर दिया कि हुक्म यह दयान फरमाया कि अब जियारत कुदूर ओरतों को मकरूह ही नहीं, बल्कि हराम है । यह न फरमाया कि वैसी को हराम है, ऐसी को हलाल है वैसी को तो पहले भी हराम था, इस जगाना को क्या तरबरीस भाग फरमाया खुसूसन जनाने भिन्न ओर उसकी तालील (इल्लत दताई, सबब दयान किया) कि उनका खुरुज (निवृत्तना) कर कजहे फितना है । यह वही तहरीम की वजह है न की हुक्म बखूअे फितना से खास और फितना—गर अंगरों से मखसूस, हा ! यह मसलक शाफईया का है । अभी इनाम अनी से सुन चुके कि **عَنِ الشَّافِعِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** व लिहाजा किरमानी फिर अतकलानी फिर कस्तलानी कि सब शाफईया है । शुरू हे बुखारी ने इस तगफ गये । किरमानी ने कोले इनाम तय्यमी कि इस हदीस म फसादे बाज़ जनान के सबब



दास्तावेज उठाकर उस वक्त ही जब वह मांजरो में जाना मुबाह  
था जब मांजरो की मुमानत दरमय सयका है या जनाने  
फिर जनाने को? तबक सात सतर बरत की इबारत देखिये।

تَعْدِلُ دَائِمَةً فِي الْحَكَامَاتِ  
بِاخْتِيارِ الزَّمَانِ لِذِي سَبَبِهِ  
كَرَّةَ لَهْنٍ حَتَّى وَرَاحَتِهِ وَالْجَبَابِ  
الَّذِي أَشَارَتْ إِلَيْهِ عَائِشَةُ  
كَرَّةَ لَهْنٍ حَتَّى وَرَاحَتِهِ وَالْجَبَابِ  
وَالَّذِي أَشَارَتْ إِلَيْهِ عَائِشَةُ  
وَالَّذِي أَشَارَتْ إِلَيْهِ عَائِشَةُ  
وَالَّذِي أَشَارَتْ إِلَيْهِ عَائِشَةُ  
وَالَّذِي أَشَارَتْ إِلَيْهِ عَائِشَةُ  
وَالَّذِي أَشَارَتْ إِلَيْهِ عَائِشَةُ  
وَالَّذِي أَشَارَتْ إِلَيْهِ عَائِشَةُ  
وَالَّذِي أَشَارَتْ إِلَيْهِ عَائِشَةُ

यह जो तबक तबक नीए जमाना  
ले जाता है ने वाला वह मानी कर  
लेता है तबक सयक और तो दो  
किन्ना मुग व जमाना की हाजिरी  
मदद कर दुई जिस की तरफ व करत  
अदरग रजिम-लानु तबक  
अली ने अपन इस फजमान से  
जमाना मजिद मर-मुजाना  
मजिद मर-मुजाना मजिद  
मजिद मर-मुजाना मजिद  
मजिद मर-मुजाना मजिद  
मजिद मर-मुजाना मजिद  
मजिद मर-मुजाना मजिद  
मजिद मर-मुजाना मजिद  
मजिद मर-मुजाना मजिद

देखना इसी मनअ मरग जेद न सयद ली जिसका हुवन  
आम है तो **لِيَا فِي خَرْجٍ جِهَنَ مِنَ الْفَسَادِ** से फसादे वाज (कुर्र) ही  
मुराद और इसी से मनअ कुन मुस्तफाद न कि सिर्फ फसाद का लेगो

142 फाजिल साइन ने मुनियतुल मुस्तमेली को इस रह नकल कर है इसकी भी  
इस दस्तावेज उठाकर उस वक्त ही जब वह मांजरो में जाना मुबाह  
था जब मांजरो की मुमानत दरमय सयका है या जनाने  
फिर जनाने को? तबक सात सतर बरत की इबारत देखिये।



पर कतर इशारे —

कल्ला ३० काज्ज कल्ला ओरत कल्ला खिदरे च कल्ला

गुनिया ने (इन दोनों इशारतों के बीच में आपकी डवारत मन कूल करवा मुत्तासल व—हवाला तातर खानिया था) यह शब्दी से जो कुछ नकल फरमाया वह भी मुलाहजा हो।

سَيَسْئَلُ الْقَاضِي عَنْ جَوَازِ خُرُوجِ  
النِّسَاءِ إِلَى الْمَقَابِرِ قَالَ لَا يُسْئَلُ  
عَنِ الْجَوَازِ وَالْفَسَادِ فِي مِثْلِ هَذَا  
وَأَنْتُمْ تَسْئَلُونَ عَنْ مَقْدَارِ مَا يَحْتَمِلُهَا  
مِنَ اللَّعْنِ فِيهَا وَأَعْلَمُ أَنَّهَا  
كَمَا فَمَدَّتِ الْخُرُوجَ كَأَنَّكَ  
فِي لَعْنَةِ اللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَإِذَا خَرَجَتْ  
تَحْتَهَا الشَّيَاطِينُ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ  
وَإِذَا أَتَتْ الْقُبُورَ يَأْعَنُهَا رُوحُ  
الْمَيِّتِ وَإِذَا رَجَعَتْ كَأَنَّكَ فِي لَعْنَةِ اللَّهِ

यानी इनाम काजी से इरितफ सार हुआ कि ओरतो का मकबाघेर का जाना जाइज है या नहीं? फरमाया ऐसी जगह जवाज व अदम जवाज नहीं गूछते, यह पूछो कि उसने ओरत पर कितनी लानत पड़ती है। जब घर से कुबूर की तरफ चलने का इरादा करती है अल्लाह और फरिस्तों की लानत में होती है। जब घर से बाहर निकलती है सब तरफों से शैतान उसे घेर लेते हैं। जब कब्र तक पहुँचती है मय्यत की रूह उस पर लानत करती है। जब वापस आती है अल्लाह की लानत में होती है।

है कि ओरतो का मकबाघेर की हाजिरी से मुमानपत पूर्य होत है जो व ऊँची जमीन मुमानपत होगी — अब दर्ज है कि मकबाघेर की हाजिरी से मुमानपत सब कति पूर्य या दवाज के लिए? जब मस्जिद की हाजिरी से मुमानपत सब पूर्य है तो क्यों जो हाजिरी से मुमानपत नो सबक पूर्य होगी — अब आप अपनी मनकृत इशारत पर भीर की हिन्दे। इबातर का है

(किर के इन ओरतों के बिच जने में

खराबी है) अहिर है कि यह पसद व खराबी दुनिया की लगन अन्त में नही पड़ने वाला में है — तो न. पूर्य हुआ कि सहिबे गुनिया फसादे बाज ही क अन्व सन्तक हाजिरी कद को मुमानपत में सबक पूर्य होगी — ऐसा नही कि उनका इशारे सिर्फ मन्त व वालियों पर महदूद है।

मुलहजा हो इस्तेस्ना क्या खास फारसिकात के बारे में था? मुल्लक औरतों के कद्रों का जतने का सम्मान था। उसका यह जवाब मिला, इस जवाब में वही फारसिकात की तख्त स ह? गरज यह तमाम इबारत जिन से आपन इस्तिदाल फरनाया आपकी नकीजे मुद्दा में नम है।

यहाँ एक नुक्ता आर है जिससे औरतों की किरमे बनाने उनको सलाह व फत्वाद पर नजर करने के कोई मानी ही नहीं रहते और कतअन हुक्म सबको आम हो जाता है अगरचे कैसी सालेहा पारसा हो कितना दशे नहीं कि भारत के दिल से पैदा हो वह भी है और सख्त-तर है। जिसका फुरसक से आरत पर अन्देशा हो, यहाँ औरत की सलाह क्या काम देगी?

अन्हुने आनी जेना मुद्द हरा सा जेहा, आविदा जाहिदा तकिया नाकिया, हजरत अतिया रजियल्लाहु तआला अन्हा को इसी मन्ना पर अमली तार से गंजनल्लह करके हाजिरीए मरिजदे करोम मदीना तय्यबा से वाज रखा, उन पाव की ही को मरिजदे कमीम से इश्क

सबने अगीरत मुमनान उनर फारुके अन्म रजियल्लाहु तआला अन्हु के गितह से आया फल निदाह अगीरत मुमनान से शान कर। ही के मुज मारजद न न श के। उस जमानए खैर ने महज औरतों को मुमानजत कनई अजमो न थी जिसके सबब वीदीयो से हाजिरीए मरिजद आर गह-गह जियारते वाज मजारात भी मनमूल सही इन म हजरत उन्मे अतिया रजियल्लाहु तआला अन्हा ने है।

يُكَيِّبُنَا عَنْ آيَاتِ الْحَنَاشِرِ

हम जन्म ना ले डे जन्मे समनाकरमाया

وَمَرِّمُزِمٌ عَلَيْنَا

मरमर कनई मुमानजत नहीं थी।

उसी पर गुनिया की इस इज्जत में फरमाया कि यह उस वक्त था जब हाजिरीए मस्जिद उन्हें जाइज थी। अब हराम और कतई ममनूअ है। गरज इस वजह से अमीरुल मुमनीन ने उनकी शर्त कुबूल करना ही ठीक ही चाहत यही था कि यह मस्जिद न जायें। यह कहती आप मन्ना फरमाई में न जाऊगी अनीरुल मुमनीन ब पाबन्दीए शर्त मना न करमाने अमीरुल मुमनीन के बाद हुजरत जुबेर सजियरुल्लाहु तआला अन्दु से निवाह हुआ, मना फरमाते वह न मानती, एक रोज उन्होंने यह तदवीर की कि इशा के वक्त भोरी रात न उनके जाने से पहले एक मीरुल दरवाजा में कुप रहे, जब यह जायी उस दरवाजे में जाग बूझ थी कि उन्होंने निवाह कर पाते न जब सारे मुकाम पर जाकर न जा सार हुजरत हुजरत आतिशाने कहा—

إِنَّا لِلَّهِ، فَسَدَ النَّاسُ

हम अल्लाह के लिये हैं लागा ने न सफा आ गया।

यह फरमा कर भकन को वापस आयी और कि जन जा ही निजा तो हुजरत जुबेर सजियरुल्लाहु तआला अन्दु ने उन्हें यह तस्वीह फरमाई कि औरत जसी ही सलत हो उसी तरह स अन्देशा न गयी फारोक भदी की तरफ से उस पर खोक का क्या इलाज?

यह गद्यावहल गुरुर शी है निरुद

अब यह सबको एक गजाली पर लट्काना हुआ, या मुकदस पाक दामनो की इज्जत को शरीरों के शर से बचाना? हमारे अइम्मा ने दोनो इल्लत इर्शाद फरमायी इर्शाद इदिया **لِمَا فِيهِ مِنْ** दोनो को शामिल है, औरत से छोक हो या औरत पर खोक हो और आगे इल्लत दोम की तसरीह फरमायी कि — **خَوْفِ الْفِتْنَةِ**

لَا بَأْسَ لِلْعَجُوزِ أَنْ تَخْجُرَ

फजर मगरिब और इशा के अन्दर बुडिया को आने में हर्ज नहीं और



فِي النَّحْرِ وَالْبَغْرِ وَالْعِشَاءِ  
قَالَ لَا يَخْرُجْنَ فِي الصَّلَوَاتِ  
كَأَنَّهَا لَأَنَّهُ لَا فِتْنَةَ لِقَدَرِ  
الرَّغْبَةِ إِلَيْهَا وَلَئِنْ فَسَطَ  
الشَّبَقُ حَدِّسْ فَتَقَّ الْفِتْنَةُ  
غَيْرَ أَنَّ الْفُسَّاقَ إِنِّي تَشَارَهُمْ  
فِي تَحْبِيرِ وَأَعْمَارِ وَالْحُبَّةِ

इनाम अदू यूसुफ़ व इमाम मुहम्मद कहते हैं कि दुनिया तमाम नमाजों में हाज़िर हो इसलिए कि उनके निकलने में कितना नहीं क्या कि उसकी तरफ़ रगड़त कम होती है। इमाम आजम की दलील यह है कि ज्यादातीए शहवत यहां बर अंगरस्ता करती है, ता फितना वाकन हो जायगा। हों दू कि फ़ुस़ाक व तय्यार जुदा बर अंगर जुमा के अंगर। म इफ़र अफ़र फल रहते हैं ता उन हो अयकाल में दुनिया के निम मुमानअत हुई।

इनाम अदू यूसुफ़ व इमाम मुहम्मद कहते हैं कि दुनिया तमाम नमाजों में हाज़िर हो इसलिए कि उनके निकलने में कितना नहीं क्या कि उसकी तरफ़ रगड़त कम होती है। इमाम आजम की दलील यह है कि ज्यादातीए शहवत यहां बर अंगरस्ता करती है, ता फितना वाकन हो जायगा। हों दू कि फ़ुस़ाक व तय्यार जुदा बर अंगर जुमा के अंगर। म इफ़र अफ़र फल रहते हैं ता उन हो अयकाल में दुनिया के निम मुमानअत हुई।

नृणाविकक जलन इतलाक ने फतदुन कदार में परगया—  
بِالنَّظَرِ إِلَى التَّغَابِلِ الْمَذْكُورِ  
مُنِعَتْ غَيْرُ الْبَرِيَّةِ أَيْضًا  
لِعَبْدَةِ الْفُسَّاقِ وَلَيْلًا وَإِنْ  
كَانَ التَّنَسُّ يُبْجَدُ لَأَنَّ الْفُسَّاقَ  
فِي زَمَانِنَا أَكْثَرَ إِنْ تَشَارَهُمْ  
وَتَعَارَفَهُمْ بِاللَّيْلِ وَغَمَمِ

दलीले मज्जूर के पशे नजर एसो डोरत को नो राका गया जो खुद बदकार नहीं बंदोकि बदनाशो का गल्या है और रात को भी मुमानअत है अगरचे नरसे इनाम स इस का जवाज सादित होता है। इसलिए कि हमारे जमाने में फासिकों बदकारों की चलत फिरत ओर छेद-छाड ज्यादातर रात ही को होती है और बाद के उलमा

الْمُتَاخِرُونَ الْمَنَعَ لِلْعَجَائِزِ  
وَالشَّوَابِ فِي الصَّلَاةِ كُلِّهَا  
لِغَلَبَةِ الْفَسَادِ فِي سَائِرِ الْأَوَاقَاتِ

ने तो बूढ़ियों, जवानों सबके लिये  
तमान नमानों में आन मुनान अज  
कर दी है क्योंकि अब तमाम  
अवकाश में फसाद व खराबी का  
गल्बा है

इस मजमून की इबारत जमा की जाये तो एक किताब हो खुद  
उसी उम्दतुल कारी जिल्द सोम में अपनी इबारतें मनाबूला से सजा  
सफहा पहल देखिए।

فَسَدَ أَمْرٌ فِي الْحَدِيثِ أَنْذَيْتَنِي  
رَأَى الْوَجْهَ أَنْ يَأْذَنَ لَهَا وَ  
لَا يَمْنَعُ مِنْهَا فِيهِ مَنَفَعَتُهَا وَذَلِكَ  
بِذَلِكَ يَخَفُ الْفِتْنَةَ إِلَيْهَا وَلَا يَأْذَنُ  
وَرَأَى هُوَ الْإِغْلَابُ فِي ذَلِكَ الرُّكْنِ  
بِحَدِّهِ رَأَى مَا عَذَابُ الْفَسَادِ  
فِي الْقَاتِلِ وَأَنْهُ فَيَسُدُّونَ كَثِيرُونَ  
وَحَدِيثُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى  
عَنْهَا يَذَلُّ عَنْ هَذَا

इसी में है कि शौहर को चाहिये  
1. और 1 को इजाजत दे दे और  
उने ऐसे काम से न रोके जिसमें  
उर का फायदा है। यह हुक्म उस  
हालत में है जब कि औरत स और  
आरत पर फिजने का अन्देशा न  
हो और सरकार के सुधार के जमाना  
में ऐसा ही था बाखलाफ हमारे  
जमाना के दि इसमें बुराई फैली  
है, है और मुकदसे दीन बंद अमल  
ज्यादा है हरजस्त आइशा सिद्दीक।  
रजियल्लहु तआला अन्हा की  
हयास भी उगवा प्रता द रही है।

जिहादे कुबूर औरतों के लिये खराब है

उसी की जिल्दे महारुन का मतलब वाजह कर दिया कि  
हुक्म क्या बयान फरमाया यह कि अब जिसारते कुबूर औरतों को  
मकरूह ही नहीं बल्कि हराम है। यह न फरमाया कि बैसी को हराम  
है, ऐसी को हलाल है, बैसी को पहल भी हराम था, इस जमाना की  
क्या तखसीस?

अगे फरमाया रूसूसन जनाने मिल और उसको तअलील

को कि उनका खुलना पर दखल फलाना है यही आलसीयते महरीम की वजह है, न कि हुक्म वक्ल फिलाना से स्वास और फिलाना गर औरतों से मसखूस, हा' यन मसलक शाप इयों का है। अभी इमाम अनो से सुन चुक के

عَنِ الشَّافِعِيِّ بِحَدِيثِ الْخُرُوجِ

व लिहाजा किरमानो फिर असफमाना फिर करतलानी कि सर शाफईया है। शुरुडे कुरबारी म हर वरफ गये। किरमानो ने काले इमाम लगमी कि फरमाने वाज जनान के सजब सब आरतों का मुमानअत पर दलाल है। नकल करके कता-

قُلْتُ الَّذِي يُعَوَّلُ عَلَيْهِ قُلْتُ

मेने कहा, मुअतमद दही है जो

وَلَمْ يَحْدُثِ فِي الْفَسَادِ فِي الْكُلِّ

कमन बधान किया, सब ओरता ने ता मर्यादा नहीं आई है।

जिल्द बहाकम म अबू सफर इन अफूल कर से देखिए

أَمَّا الشَّوَابُ فَكَرْتُ أَنْ يَكُونَ مِنْ أَيْنِهِ

रही उवान और न ता क पर और

عَلَيْهِمْ وَبَيْنَ حَيْثُ خَرَجُوا وَلَا تَتَى

उन से बिरता मकन लेजने स

لِلْمَرَأَةِ أَحْسَنُ مِنْ زَوْجٍ قَعْرِ بَيْتِهَا

वे खौफो नही पहराये भी निकल,

औरत के रोदे अपा घर की तरह इस्तिधार कम से बरतार कोई चीज नहीं।

अनहम्दु लिल्लाह! अब ता व हू एक म कुछ कमी न रही -

मौलाना शिखर बल्लू मुहम्मद १५ भाग  
ने लिखे औरने उन के जवाबदेहि है

जरा यह भी देखा मजिया कि कहर उम्माए कि कम ने खुलजे जन के चन्द मजाजेअ गिनार लान का बयान हमारे रिवाजा

مِنْ رُؤُوسِ النَّاسِ الْخُرُوجِ الذِّكْرِ

मे है और ता क फरमा दिया है

कि इनके सिग मे इक नत नही और अगर आरर हुआ देगा तो दोनों मुनहमार होग। डरे मुजर म है।

لَا تَخْرُجُ إِلَّا بِحَقِّ لَهَا أَوْ عَلَيْهَا

औरता न निकले मगर अपने लिये

या इन ऊपर किये हक के



أَوَّلُ يَارْفُ بُيُوتِ كُلِّ  
جُمُعَةٍ مَرَّةً أَوْ أَلْحَدَةً كُلِّ  
سَنَةٍ وَلِكُلِّ بَيْتٍ قَائِمَةٍ أَوْ عَائِلَةٍ  
لَا فَمَا أَذِيَتْ وَإِنْ أَذِنَ  
كَانَ عَرَبِيَّةً

सर्वदा या हर हाता में एक बार  
॥ हिन का मुनकाल द लिये  
मा सुख म कहरा इगर महरिम  
॥ मुनकाल द हाथ आर दग  
॥ नर मन की नी क सर्वद  
इन्क द ना प्र सुरग न न निलन  
॥ अर उर उर न इन्क न द द  
तो दोनो मुनहगार होगे ।

[illegible]

के लिये जाइज है कि  
... (1) मां  
... (2) उनकी अयादत,  
... (3) ...  
... (4) ...  
... (5) ...  
... (6) ...  
... (7) ...  
... (8) ...  
... (9) ...  
... (10) ...  
... (11) ...  
... (12) ...  
... (13) ...  
... (14) ...  
... (15) ...  
... (16) ...  
... (17) ...  
... (18) ...  
... (19) ...  
... (20) ...  
... (21) ...  
... (22) ...  
... (23) ...  
... (24) ...  
... (25) ...  
... (26) ...  
... (27) ...  
... (28) ...  
... (29) ...  
... (30) ...  
... (31) ...  
... (32) ...  
... (33) ...  
... (34) ...  
... (35) ...  
... (36) ...  
... (37) ...  
... (38) ...  
... (39) ...  
... (40) ...  
... (41) ...  
... (42) ...  
... (43) ...  
... (44) ...  
... (45) ...  
... (46) ...  
... (47) ...  
... (48) ...  
... (49) ...  
... (50) ...  
... (51) ...  
... (52) ...  
... (53) ...  
... (54) ...  
... (55) ...  
... (56) ...  
... (57) ...  
... (58) ...  
... (59) ...  
... (60) ...  
... (61) ...  
... (62) ...  
... (63) ...  
... (64) ...  
... (65) ...  
... (66) ...  
... (67) ...  
... (68) ...  
... (69) ...  
... (70) ...  
... (71) ...  
... (72) ...  
... (73) ...  
... (74) ...  
... (75) ...  
... (76) ...  
... (77) ...  
... (78) ...  
... (79) ...  
... (80) ...  
... (81) ...  
... (82) ...  
... (83) ...  
... (84) ...  
... (85) ...  
... (86) ...  
... (87) ...  
... (88) ...  
... (89) ...  
... (90) ...  
... (91) ...  
... (92) ...  
... (93) ...  
... (94) ...  
... (95) ...  
... (96) ...  
... (97) ...  
... (98) ...  
... (99) ...  
... (100) ...



जलील व दक्कक तौफीक अने ७ जाहिर हुअ आम्हए मुजय्जीन  
 'नपस' जय्जले कब्र जिखन है। इतकी इज्जत आरते का भी  
 हुई जिहारत कुदूस क लेख 'मुकुन निजा' मी कहते आम कुदूस  
 महररी कदर है और मानेइना 'रत कब्र क जिये' कदरना क नाम  
 का मन गरमाते है। व जिये ना खुद ज उनका मरिन्द की  
 गुमान नउ स सन्द ता है और इनके खुद ज म खाके जिये ना  
 इतिहास फल फरमाते है तन्मम खुद ज कि हमन 'जेक' किये इसी  
 लय्ज ला है जो जहार कब्र घर म जाया जात मरजलन हज या किसी  
 मकर महरत का गई घर म जात कब्र मीगी उस की जियारत वर  
 की मरती कि जलज व फजल वल हैद हुजन व बुका व नीहा व  
 इतक मर मरती अल वगैरह खुद कले शरदया से खाली हो।  
 एक मुजरती (एकामियत का नाम है) ने जिन रिवागत से  
 जिये अल मर हा कब्र म जात मकान हुती कदर है।

حَيْثُ قَالَ وَارْتَدَّ عَنْ الْفِرْقَةِ  
 ثَابِتًا لِلرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ جَمِيعًا

उन्हीन यें फरमाया और सही तर  
 यह है कि रुखा सत मद व औरत  
 दोनों को लिये साबित है क्योंकि  
 मरती है हजरत आइशा

जलील व दक्कक तौफीक अने ७ जाहिर हुअ आम्हए मुजय्जीन  
 'नपस' जय्जले कब्र जिखन है। इतकी इज्जत आरते का भी  
 हुई जिहारत कुदूस क लेख 'मुकुन निजा' मी कहते आम कुदूस  
 महररी कदर है और मानेइना 'रत कब्र क जिये' कदरना क नाम  
 का मन गरमाते है। व जिये ना खुद ज उनका मरिन्द की  
 गुमान नउ स सन्द ता है और इनके खुद ज म खाके जिये ना  
 इतिहास फल फरमाते है तन्मम खुद ज कि हमन 'जेक' किये इसी  
 लय्ज ला है जो जहार कब्र घर म जाया जात मरजलन हज या किसी  
 मकर महरत का गई घर म जात कब्र मीगी उस की जियारत वर  
 की मरती कि जलज व फजल वल हैद हुजन व बुका व नीहा व  
 इतक मर मरती अल वगैरह खुद कले शरदया से खाली हो।  
 एक मुजरती (एकामियत का नाम है) ने जिन रिवागत से  
 जिये अल मर हा कब्र म जात मकान हुती कदर है।  
 उन्हीन यें फरमाया और सही तर यह है कि रुखा सत मद व औरत  
 दोनों को लिये साबित है क्योंकि मरती है हजरत आइशा  
 जलील व दक्कक तौफीक अने ७ जाहिर हुअ आम्हए मुजय्जीन  
 'नपस' जय्जले कब्र जिखन है। इतकी इज्जत आरते का भी  
 हुई जिहारत कुदूस क लेख 'मुकुन निजा' मी कहते आम कुदूस  
 महररी कदर है और मानेइना 'रत कब्र क जिये' कदरना क नाम  
 का मन गरमाते है। व जिये ना खुद ज उनका मरिन्द की  
 गुमान नउ स सन्द ता है और इनके खुद ज म खाके जिये ना  
 इतिहास फल फरमाते है तन्मम खुद ज कि हमन 'जेक' किये इसी  
 लय्ज ला है जो जहार कब्र घर म जाया जात मरजलन हज या किसी  
 मकर महरत का गई घर म जात कब्र मीगी उस की जियारत वर  
 की मरती कि जलज व फजल वल हैद हुजन व बुका व नीहा व  
 इतक मर मरती अल वगैरह खुद कले शरदया से खाली हो।  
 एक मुजरती (एकामियत का नाम है) ने जिन रिवागत से  
 जिये अल मर हा कब्र म जात मकान हुती कदर है।



فَقَدْ رَوَى أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى  
عَنْهَا كَانَتْ تَزُورُ قَبْرَ رَسُولِ اللَّهِ  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي  
كُلِّ وَقْتٍ وَأَنَّهَا أَخْرَجَتْ حَاجَةً  
زَارَتْ قَبْرَ أَخِيهَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ

रज़ियल्लाहु तआला अन्हा कब्रे  
रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि  
वसल्लम की जियारत तो हर  
वक़्त करतीं और जब सफ़रे हज  
को निकलतीं तो राह में अपने भाई  
अब्दुर्रहमान की कब्र की जियारत  
कर लेतीं।

**औरतों का जियारते कुबूर के लिये  
जाना मकरुह तहरीमी है**

बहरुराइक व आलमगीरी व जामेउरुमूज़ व मुख्तारुल  
फ़तवा व कश्फ़ुल ग़िता, व सिराजिया व दुर्रे मुख्तार व फ़तहुल  
मन्नान की इब्दारतें जिन से तसहीहुल मसाइल में इस्तिनाद किया।  
हमारे खिलाफ़ नहीं, हां मातहे मसाइल पर रद्द हैं, जिसमें मुतलक  
कहा था। "जनों रा जियारते कुबूर वकौले असह मकरुह तहरीमी  
अस्त" लाजरम वही दुर्रे मुख्तार जिसमें था।

لَا بَأْسَ بِزِيَارَةِ الْقُبُورِ لِلنِّسَاءِ

औरतों के लिये जियारते कुबूर में  
हरज नहीं।

उसी में है—

وَيُكْرَهُ خُرُوجُهُنَّ تَحْرِيبًا

औरतों का निकलना मकरुह  
तहरीमी है।

**जनाजे में शिरकत की मुमानअत**

वही बहरुराइक जिस में था **الْأَمْرُ أَنَّ الرَّخْصَةَ ثَابِتَةٌ لَهُمْ**  
उसी में है।

لَا يَنْبَغِي لِلنِّسَاءِ أَنْ يَخْرُجْنَ

فِي الْجَنَازَةِ لِذَاتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى

औरतों को जनाजे में निकलना न  
चाहिये क्योंकि नबी सल्लल्लाहु  
तआला अलैहि वसल्लम ने उन्हें



عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَا عَنْ ذَلِكَ وَقَالَ انْصَرَفْنَ مَا زَوْرَاتٍ غَيْرَ مَا جَوْرَاتٍ - इससे मना किया है और फरमाया है कि वह गुनहगार वे सवाद पलटती हैं।

इत्तेबाए जनाजा कि फर्जे किफाया है। जब इसके लिये उनका खुरुज नाजाइज हुआ तो जियारते कुबूर कि सिर्फ मुस्तहब है। उसके लिये कैसे जाइज हो सकता है? फिर नफसे जियारते कब्र जिसके लिये औरत का खुरुज न हो, उसका जवाज भी इन्दतहकीक फी नफसेही है कि जिन शुरूते मजकूरा से मशरूत उनका इजतिमा नजर बआदते जना नादिर है और नादिर पर हुक्म नहीं होता तो सबीले असलम इससे भी रोकना है।

**जियारते कब्र से मना करने और न मना करने में तत्बीक और उस पर आला हजरत का हाशिया**

रहुल मुहतार और मिनहतुल खालिक में है :-

إِنْ كَانَ ذَلِكَ لَتَجِدَ يَدَ الْحَزَنِ  
وَالْبُكَاءِ وَالنَّدْبِ عَلَى مَا جَرَتْ  
بِهِ عَادَتُهُنَّ فَلَا يَجُوزُ وَعَلَيْهِ  
حَمْلُ حَدِيثِ لَعْنِ اللَّهِ  
رَأَائِرَاتِ الْقُبُورِ وَإِنْ كَانَ  
لِلْإِعْتِبَارِ وَالرَّحْمَةِ مِنْ غَيْرِ  
بُكَاءٍ وَالسَّبْرُ لَكَ بِزِيَارَةِ قُبُورِ  
الضَّالِّينَ فَلَا بَأْسَ إِذَا كُنَ  
عَجَائِزَ وَيَكْرَهُ إِذَا كُنَ شَوَابَ

अगर यह गम ताजा करने, रोने और बैन करने के लिये हो जैसा कि औरतों की आदत है तो नाजाइज है। उसी पर महमूल होगी यह हदीस कि 'अल्लाह ने जियारते कब्र करने वालियों पर लानत की' और अगर इबरत हासिल करने, रोये बगैर रहम खाने और कुबूरे सालेहीन से बरकत हासिल करने के लिये हो तो जमाअते मरिजद में हाजिरी की तरह बुद्धियों के लिये हर्ज नहीं और जवानों के लिये मकरुह है। रहुल मुहतार में इजाफा किया कि



كَحُضُورِ الْجَمَاعَةِ فِي الْمَسْجِدِ  
 زَادَ فِي رَدِّ الْمُخْتَارِ وَهُوَ تَوْفِيقٌ  
 حَسَنٌ أَمْ وَكَبَّتْ عَلَيْهِ أَقْوَلُ  
 قَدْ عَلِمَ أَنَّ الْفَتَوَى عَلَى الْمَنَعِ  
 مُطْلَقًا وَلَوْ عَجُوزًا وَلَوْ لَيْلًا  
 فَكَذَلِكَ فِي زِيَارَةِ الْقُبُورِ بَلْ  
 أَوَّلَى -

JANNATI NAUN

यह उम्दा ततबीक है उस पर मैंने (इमाम अहमद रज़ा) ने हाशिया लिखा, मैं कहता हूँ यह मालूम हो चुका है कि फ़तवा इस पर है कि जमाअते मस्जिद की हाजिरी औरतों के लिये मुतलकन मना है, अगरचे औरत बूढ़ी हो, अगरचे रात को निकले, तो यूँ ही ज़ियारते कुबूर को निकलने में सभी औरतों के लिये मुमानअत होगी बल्कि यहाँ बद्रर्जए औला होगी।

आपने एक सूरत शेख फानी<sup>1</sup> मुरतइश से पर्दे के अन्दर तवज्जोह लेने की ज़िक्र की है। इसमें क्या हर्ज है। जबकि ख़ारिज से कोई फ़ितना न हो न उसे यहाँ से इलाका।

**अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला सिर्फ़ मर्द ही हो सकता है**

मगर वह जो औरत का खलीफ़ा होना लिखा, सही नहीं, अइम्माए बातिन का इजमा है कि औरत दाईए<sup>2</sup> इलल्लाह नहीं हो

1. शेख फानी, फना के करीब पहुँचा हुआ बूढ़ा। मुरतइश—जिसको रअशा और बराबर कपकपी का मज़ है।

2. दाईए इलल्लाह—अल्लाह की तरफ़ दावत देने वाली, जाहिर है कि अहले बातिन अपनी इस्तलाह में दाईए इलल्लाह उसको नहीं कहते जिसने किसी को नमाज व रोज़ा या इस्लाम व ईमान की तलकीन कर दी। यह तो हमारी इस्तलाह में दाई व नुबल्लिग़ कहा जाएगा। मगर अहले बातिन दाईए इलल्लाह उसे कहेंगे जो अपनी हिदायत व इर्शाद तर्बियत व तालीम और तज़कियए बातिन के ज़रीया खुदा तक पहुँचाने की दावत देने वाला और खुदा तक पहुँचाने वाला जैसा इमाम अब्दुल बहाव शुअरानी अलैहिर्रहमा की इबारत से जाहिर है। यकीनन उनके नज़दीक यह औरत का मनसब नहीं, हाँ! औरत का मनसब इतना ज़रूर है कि अपनी औलाद, नहारिम, शौहर या सिर्फ़ औरतों को नेक बातों का हुक्म करे, बुराइयों से रोके अलबत्ता ना महरमों और आम मजनों से ख़िताब करना उसके हद्द से बाहर है।



सकती, हाँ तदाबीर इशाद कर्दाए मुर्शिद बताने में सफीरे महज हो तो हर्ज नहीं।

इमाम शुअरानी भी जानुश—शरीअतुल कुबरा में फरमाते हैं—

قَدْ أَجْمَعَ أَهْلُ الْكَشَفِ  
عَلَى اسْتِزْوَاطِ الدُّكُورِ فِي كُلِّ  
دَاعٍ إِلَى اللَّهِ وَلَمْ يَبْلُغْنَا أَنْ  
أَحَدًا مِنْ نِسَاءِ السَّلَفِ الْمَالِجِ  
وَمَنْدَارَتِ التَّرْبِيَةِ الْمُرِيدِينَ  
أَبَدًا لِنَقْصِ لِلنِّسَاءِ فِي الدَّرَجَةِ  
وَأَنْ وَرَدَ الْكَمَالُ فِي بَعْضِهِنَّ  
كَمَرِيَمَ بِنْتِ عِمْرَانَ وَأَسِيَةَ  
أَمْرَأَةٍ فِرْعَوْنَ فَذَلِكَ كِبَالُ  
بِالنِّسْبَةِ لِلتَّقْوَى وَالَّذِينَ لَا بِالنِّسْبَةِ  
لِلْحُكْمِ بَيْنَ النَّاسِ وَتَمْلِيكِهِمْ  
فِي مَقَامَاتِ الْوِلَايَةِ وَغَايَةِ  
أَمْرِ الْمَرْأَةِ أَنْ تَكُونَ عَابِدَةً زَاهِدَةً  
كَرَابِعَةَ الْعَدْوِيَّةِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى  
عَنْهَا.

अहले बातिन का इस बात पर इजमा व इत्तेफाक है कि हर दाईए इलल्लाह के लिये मर्द होना शर्त है और हमें ऐसी कोई रिवायत नहीं मिली कि सल्फे सालेहीन की मस्तूरात में से कोई खातून मुरीदों की तरबियत के लिये कभी सदर नशीन हुई हों। क्योंकि औरतें दर्जा में नाकिस हैं और बाज ख्वातीन मसलन हजरत मरियम बिनत इमरान और आसिया जौजए फिरऔन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के बारे में जो कामिल होने का जिक्र आया है, तो यह कामिल होना तकवा और दीनदारी के लिहाज से है। लोगों के दर्मियान हाकिम होने और उन्हें मकामाते विलायत तय कराने के लिहाज से नहीं है। औरत की गायते शान बस यह है कि आबिदा, जाहिदा हो जैसे राबिया अदविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा।

وَاللَّهُ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى أَعْلَمُ وَعَلَيْهِ جَلَّ مَجْدُهُ أَنْتُمْ وَأَحْكُمُ